उपाधि...

नाथद्वारा के डॉ. श्याम प्रकाश देवपुरा 'विद्यासागर' की मानद उपाधि सम्मानित

कोटा । नाथद्वारा के वरिष्ठ साहित्यकार एवं साहित्य मंडल के प्रधानमंत्री डॉ.श्याम प्रकाश देवपुरा को थावे विद्यापीठ, शंकर शिव नारायण साहित्य ग्राम, बलिवन सागर, गोपालगंज (बिहार) द्वारा मानद विद्यासागर उपाधि से सम्मानित किया गया। विद्यापीठ की अकादमिक परिषद् की अनुशंसा पर थावे विद्यापीठ के कुलपति डॉ. विनय कुमार पाठक एवं कुल सचिव डॉ. पी. एस. दयाल यति के हस्ताक्षर युक्त विद्यासागर की मानद उपाधि प्रदान की गई। यह उपाधि देवपुरा की सुदीर्घ हिन्दी सेवा, सारस्वत साधना, कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों, शैक्षिक प्रदेयों, महनीय शोधकार्य तथा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के आधार पर हरिद्वार अधिवेशन में 25 अक्टूबर 2026 को प्रदान की गई। समनेलन में उनकी श्लाघनीय उपलब्धियों और साहित्य सेवा की प्रशंसा कर उन्हें हिंदी सेवा का महान विचारक बताया गया।

थावे विद्यापीठ का मूल मंत्र 'बचे रहेंगे शब्द, बची रहेगी संस्कृति' है। विद्यापीठ इसी भावना के साथ हिन्दी और भारतीय संस्कृति की सेवा करने वाले विद्वानों को सम्मानित करता है। इसी कड़ी में देवपुरा को सम्मानित किया गया है। देवपुरा के सम्मान से नाथद्वारा में खुशी की लहर दौड़ गई। साहित्यकारों, शिक्षकों, समाजसेवियों और शुभचिंतकों ने उन्हें बधाई दी। लोगों का कहना है कि यह सम्मान सिर्फ डॉ. देवपुरा का नहीं, बल्कि पूरे नाथद्वारा और मेवाड़ के लिए गर्व की बात है। श्रीनाथजी की नगरी से जुड़े एक विद्वान को राष्ट्रीय स्तर पर यह सम्मान मिलना हम सबके लिए प्रेरणा है। शुभचिंतकों ने कहा कि डॉ. देवपुरा का जीवन सादगी, साधना और साहित्य को समर्पित रहा है। विद्यासागर जैसी उपाधि मिलना उनके जीवन भर की तपस्या का सम्मान है।

परिचय

हिंदी भाषा को बढ़ावा देने और साहित्य की सेवा के लिए समर्पित नाथद्वारा साहित्य मंडल के अध्यक्ष श्यामप्रकाश देवपुरा का जन्म 17 दिसम्बर 1958 को पिता स्व. भगवतीप्रसाद देवपुरा एवं माता स्व. लक्ष्मी देवी देवपुरा के परिवार में नाथद्वारा में हुआ। बी.एससी.एवं एमए की शिक्षा प्राप्त की है। हिंदी और बृज भाषाओं के ज्ञाता साहित्य-मण्डल श्रीनाथद्वारा के पिछले 30 वर्षों से अवैतनिक प्रबन्ध मंत्री एवं वर्तमान में प्रधानमंत्री हैं। वर्ष 1937 में शिक्कुमारजी शास्त्री द्वारा स्थापित इस संस्था से इनके पिता भगवतीप्रसाद देवपुरा जुड़ गए और 70 वर्षों तक संस्था के प्रधानमंत्री रहे। संस्था से पहले से ही सक्रिय इनके पुत्र श्यामप्रकाश देवपुरा ने पिता की 6 जनवरी 2014 को निर्वाण के पश्चात संस्था का सम्पूर्ण कार्यभार संभाल लिया। हिंदी लाओ देश बचाओ के लक्ष्य को लेकर चलने वाले देवपुरा वर्ष में तीन समारोह हिंदी दिवस समारोह, पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह एवं स्व. भगवतीप्रसाद देवपुरा स्मृति समारोह का आयोजन कर साहित्य चर्चा उपनिषद् सत्र, शोध पत्र वाचन, देश के हिन्दी साहित्यकारों, संपादकों, लोककलाकारों, संस्कृति के उन्नायकों का सम्मान एवं पुस्तक विमोचन के कार्यक्रम कर हिंदी और साहित्य की सेवा करते हैं। विगत 15 वर्षों से हरसिंगार' त्रैमासिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। लगभग 40 वृहद ग्रंथों के प्रकाशन में इनका सम्पूर्ण सहयोग रहा है। इनको राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी' राज्य सरकार द्वारा 3 वर्ष के लिए सदस्य मनोनित किया गया। विभिन्न राष्ट्रस्तरीय साहित्यिक प्रतियोगिताओं के माध्यम से हिंदी और साहित्य को बढ़ावा देते हैं। वृहद कार्यक्रम आयोजन एवं संचालन के लिए इन्हें वन मेन आर्मी कहे तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। संस्था का अपना एक पुस्तकालय है जिसके एक कक्ष में अष्टछाप के कवियों से संबंधित दुर्लभ व्यक्तित्व एवं कृतित्व को संजोकर रखा गया है। ब्रजभाषा एवं हिंदी के भक्ति-साहित्य पर शोध करने वाले छात्रों के लिए यहाँ पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। एक और कक्ष में दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ रखी गई हैं तथा एक कक्ष वाचनालय है जिसमें अभी लगभग एक लाख से अधिक पुस्तकें हैं। साहित्य सेवा के लिए इन्हें देश की कई प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत, अलंकरण, सम्मानोपाधियों से सम्मानित किया गया है। इनके सम्मान की लंबी सूची है, प्रमुख रूप से राजस्थान साहित्य, कला एवं संस्कृति परिषद', हल्दीघाटी का प्रतिष्ठित 'राजस्थान रत्न राष्ट्रीय अवार्ड' प्रदान किया गया। राजभाषा संघर्ष समिति, दिल्ली, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गाजियाबाद, राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास (भारत), ज्ञानदीप, मथुरा, ब्रजकला केन्द्र, मथुरा, भारतेन्दु समिति, कोटा, हिंदी कश्मीरी संगम, श्रीनगर, कश्मीर तथा देश के अन्य अनेक संस्थाओं द्वारा प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर इन्हें सम्मानित किया गया है।

शताब्दी पुण्यतिथि 11 नवम्बर पर समर्पित

साहित्य मर्मज्ञ थे डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव



भारतीय साहित्य जगत के आभामंडित, सुविख्यात एवं ज्ञान की किरणों को बिखेरती हुई पाठकों के अंतर्दर्वंद्व को झकझोरती हुई उसे आनंदित कर चार चांद लगा देने में सक्षम एवं सफल थे-हमारे प्यारे साहित्यकार डॉ0 श्रीरंजन सूरिदेव।

डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव का जन्म28 अक्टूबर ,1926 ईस्वी को शुभेश्वर नाथ के घर धौनी, दुमका में हुआ था। इनकी शिक्षा एमए त्रय थी। इसके साथ इन्हें पीएचडी0 की उपाधि से अलंकृत होने का सौभाग्य प्राप्त था। यह साहित्य के क्षेत्र में प्रेरणा अपने ताऊ पंडित रामेश्वर पाठक तथा पंडित नरसिंह मोहन मिश्र से प्राप्त हुई। इनका गृहस्थ जीवन अपनी धर्मपत्नी लता रंजन से पल्लवित पुष्पित हुआ। श्रीरंजन सूरिदेव 26 वर्षों तक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद में परिषद पत्रिका के संपादक तथा उपनिदेशक, शोध के पद से सेवानिवृत्त हुए, जो साहित्य जगत हेतु शान की बात है।

इनके कार्यों की प्रशंसा संपादन के क्षेत्र में प्राप्त हुआ। उदाहरण अन्वेषण, विवेचन ,मूल्यांकन, संदर्भन, प्रचार-प्रसार आदि है। डॉक्टर श्रीरंजन सूरिदेव संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, जैन धर्म, बौद्ध धर्म के अतिरिक्त हिन्दी के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाए थे। मूर्धन्य विद्वान एवं साहित्यकार श्रीरंजन जी 'वसुदेव हिंदी: भारतीय जीवन और संस्कृति की बृहत कथा' शीर्षक रूप में पीएचडी0 की उपाधि प्राप्त किए।

यह ग्रंथ प्राचीन साहित्य के वांग्मय मूर्ति स्वरूप ज्ञानमय कोश है। 'मेघदूत : एक अनुचिंतन ' के बारे में श्रीरंजन जी ने प्राचीन काल से आज तक तथा देश ड्डविदेश तक लिखे जाने वाले चीजों को उल्लेखनीय ग्राह्य बनाकर पेश किया है, जो बेमिसाल है। इस ग्रन्थ के बारे में आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने भूमिका लिखी थी। इस ग्रंथ में रंजन जी की प्रकृति चित्रण काफी प्रभावशाली है, वह देखते ही बनती है।

जैसे 'प्रकृति के सुकुमार कल्प कवि कालिदास ने मेघदूत के प्रकृति सौंदर्य में मानव को करुण अनुभूतियों का दर्शन किया है तथा मानव की चिरसंचित वेदनाओं का प्रकृति की अनंत छवि के माध्यम से गुम्फन किया है। अभिशाप ड्डस एवं विरह विताड्डित यक्ष के वेदना संदेश वाहक वलाहक में कवि ने विपुल विश्व की चिरंतन व्यथा का विमल विनियोग कर वलाहक की भूमिका में अमर अश्रु का इतिहास भी लिख दिया है। '

साहित्य मर्मज्ञ रंजन जी के साहित्य का पदार्पण 1945 ईस्वी में हुआ, लेकिन इससे पहले भी आचार्य शिवपूजन सहाय द्वारा संपादित'बालक' मासिक पत्रिका में निबंध 'मंदार पर्वत' नाम से प्रकाशित हो चुका था। ऐसे तो श्रीरंजन जी द्वारा साहित्य ग्रंथों का योगदान बृहत है, लेकिन प्रमुख निम्नलिखित है-वसुदेव हिन्दी भारतीय जीवन और संस्कृति की बृहत कथा, आलोचना ,मेघदूत: एक अनुचिंतन, गीत ड्डसंगम , बहुत है काव्य संग्रह, वसुदेव हिंदी, प्राकृत से हिंदी, सिंहासन बत्तीसी संस्कृत से हिन्दी, पाटलिपुत्र की धरोहर रामजी मिश्र मनोहर, अभिनंदन ग्रंथ ,जीवन दर्पण, आचार्य शिवपूजन सहाय की देनदिनी :डायरी के प्रथम खंड, स्मृति शेष आर्य पुत्र: पंडित राम नारायण शास्त्री, स्मृति ग्रंथ आदि। 'बहुत हैं' 1956-63 की अवधि में रचित सूरिदेव जी की अमर रचनाओं में से एक है। इस ग्रन्थ में 56 गीत संग्रहित हैं।

इसकी भूमिका डॉ. विमल कुमार रचित है। यह किशोर हृदय की रचना होने के कारण सहज समादरणीय है। इसे हिंदी साहित्य संग्रह के गीतों के क्षेत्र में एक क्रोंशशिला की तरह स्वीकार करेगा।विद्वान एवं साहित्यकार श्रीरंजन जी द्वारा रचित 'बहुत है' शीर्षक की ये पंक्तियां कभी काव्य रसिकों को विस्मृत नहीं होगी-

चांद चांदनी के होठों से
लेता लोल लहर का चुम्बन,
सौरभ का सागर दे जाता
सरिता सांसों को आमंत्रण।
खिलती कलियों से हंसकर जब,
मधुकर करता बात बहुत है,
आती उनकी याद बहुत है।

(गीत संख्या एक)।

प्रकांड विद्वान एवं साहित्य वाचस्पति श्रीरंजन सूरिदेव कवि भी थे। ये स्वयं कहते थे-कोई भी कवि हो प्राचीन अथवा नवीन, उसके अंदर एक दर्शन भी होता है, जिसे वह अपनी रचनाओं में देना चाहता है, देता है। डॉ. श्री रंजन द्वारा जिस पत्रिका का संपादन किया जाता था, वह अपने आप में विशिष्ट छाप छोड़ जाता है। जिसमें प्रमुख है-साहित्य, परिषद पत्रिका, अभिनव प्रत्यक्ष, धर्मायण आदि। इन्हें संपादन की कला शिवपूजन सहाय तथा नलिन विलोचन शर्मा से प्राप्त हुई थी।

श्रीरंजन जी ने शिवपूजन सहाय की साहित्यिक सामाजिक उस मान्यता का जिक्र किया था, जिसके अनुसार साहित्य सेवा में शुचिता एवं चरित्र का महत्व सर्वोपरि है। विद्वान एवं साहित्यकार श्रीरंजन जी के पास बिहार तथा बाहर के विद्वानों की पुस्तकों की समीक्षा के निमित्त आती थी। इनके द्वारा रचित 'अक्षर भारती' नामक संस्कृत साधना का अपतिम अक्षरोल्लास है। रंजन जी ने बाल रचनाएं लिखकर साहित्य को अमूल्य योगदान दिया। वे बाल कथा लिखकर बच्चों को ज्ञान के साथ मनोरंजन भी देते रहे। जैसेड्ड पिटारी की रानी, बेताल का बदला, काठ की तलवार आदि।

श्रीरंजन जी जैन धर्म के ज्ञाता थे। एक जगह अपने पत्र में उल्लेख किया है कि मैं दिल्ली में जैन दर्शन से संदर्भित शोध पूर्ण आलेख पढ़ा था। उसकी अध्यक्षता ऑक्सफोर्ड के पंडित प्रोफेसर मतीलाल कर रहे थे। आलेख वाचन के बाद प्रोफेसर मतीलाल ने कहा था-वेरी नाइस। इस वेरी नाइस की व्याख्या करना मानो सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। श्रीरंजन जी ने कई स्मारिकाओं का संपादन एवं कतिपय ग्रंथों का संपादन भी किया, जिसका साहित्य जगत सदैव ऋणी रहेगा।



इनकी रचनाएं वैविध्यपूर्ण हैं। ये संपादक ,आलोचक, वक्ता, शोध विद्वानआदि के रूप में सेवा करते रहे। उन्हें कई पुरस्कार एवं उपाधियां मिलने का सौभाग्य प्राप्त था। जिसमें प्रमुख है-भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा, बिहार शाखा से सम्मानित, बिहार के भूतपूर्व राज्यपाल डॉक्टर अखलाक उर रहमान द्वारा संस्कृत सम्मान, बिहार के भूतपूर्व राज्यपाल सुंदर सिंह भंडारी द्वारा सरस्वती विद्या मंदिर के शिलान्यास समारोह में सम्मान, जैन धर्म हेतु लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड, रंगमंच संस्था पटना सिटी के निदेशक एवं संस्थापक श्री विश्वनाथ शुक्ल चंचल द्वारा संस्कृति सौरभ सम्मान, भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा 30 मई ,2017 को राष्ट्रपति भवन में हिन्दी सेवा सम्मान (विवेकानंद पुरस्कार) 2015 आदि प्रमुख हैं।

श्रीरंजन सूरिदेव चहुंमुखी प्रतिभा के धनी, साहित्य के आधार स्तंभ, बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व, साहित्य के प्रति समर्पण, साहित्य प्रेमियों के हितैषी धार्मिक प्रवृत्ति आदि में निष्ठा रखने वाले साहित्यकार थे।इस प्रकार ये साहित्य जगत की शान थे।

श्रीरंजन जी का देहावसान 11 नवम्बर, 2018 को पटना में हुआ। यह साहित्य जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। श्रीरंजन जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी यादें साथ हैं। उन्होंने साहित्य की महती सेवा की थी। इसे हम लोग सदैव स्मरण रखेंगे तथा उनके मार्ग पर चलकर अग्रसर होंगे। वे हम लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

आपके ऊपर यह शायरी बिल्कुल चरितार्थ होता है-शाज मालूम हुआ, अस्त बयानी क्या है, दिल में वो आग है, लफ्जों में समा भी न सकूं।

दुर्गेश मोहन
राघोपुर, बिहटा, पटना (बिहार)

अहिपन और भरदुतिया



अहिपन के बिना मिथिला में कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता है फिर चाहे वो कोई पूजा पाठ या उत्सव ही क्यों ना हो । पूजा पाठ से लेकर शादी व्याह मुंडन उपनयन गृहप्रवेश इत्यादि सब में अहिपन का विशेष महत्व होता है ।। अहिपन अर्थात रंगोली मगर इस रंगोली को बनाने के लिए किसी रंग का इस्तेमाल नहीं किया जाता है बल्कि हमारे यहां इसे बनाने के? लिए अरवा चावल का घोल और सिंदूर का उपयोग किया जाता हैं । जिसे हम अहिपन कहते हैं ।। यह मिथिला का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पारंपरिक लोक परंपरा है । अहिपन में मूलरुप से अष्टदल कमल बनाया जाता है ।

अष्टदल अहिपन मिथीला का एक पारंपरिक और पवित्र लोक परंपरा है । आठ कमल दल होने के कारण इसे अष्टदल कहा जाता है?।

अहिपन के लिए हमलोग मनी प्रबल का स्तेमाल करते है । मनी प्रबल अर्थात सिंदूर पिटार..!! हमारे यहां सिंदूर पीटार को लक्ष्मी नारायण का रुप माना जाता है ।

पीटार को विष्णु और सिंदूर को मां? लक्ष्मी का स्वरुप माना जाता है और हमारे यहां अहिपन चांगुर अर्थात चार उंगलियों का इस्तेमाल करके बनाया जाता है। पीटार में चारों उंगलियां डुबो कर जब हम जमीन पर एक रेखा खिचते है तो उस में से तीन लाइनें उभर कर आती है । जिसे ब्रह्मा विष्णु और महेश का प्रतीक रूप माना जाता है । यह केवल एक अहिपन बनाने का तरीका मात्र नहीं है बल्कि इसके साथ हमारे पुर्वजों की आस्था व विश्वास भी जुड़ा है ।।

भरदुतिया

आज के दिन बहनें सुबह-सवेरे जल्दी उठ कर स्नानादि से निवृत होकर ईश्वर की अराधना करती है और अपने भाई की लम्बी उम्र आरोग्य सुख समृद्धि तथा खुशियों के लिए मंगलकामना करती है । तत्पश्चात आंगन को गाय के गोबर से लीपती है और फिर उस पे मिट्टी का ठाऊं करती है अर्थात गोबर से लीपे आंगन को फिर से उसके ऊपर से मिट्टी से लीपती है और उसके बाद ठाऊं के ऊपर पिठार और सिंदूर से अहिपन बनाती है फिर वही पिठार सिंदूर लोटे में भी लगाती है जिस लोटे में जल भर कर लाया जाता है भाई का हाथ धुलाने के लिए ,उसके बाद एक पीढ़ी को पानी से धोकर गंगा जल से सिक्त किया जाता है और फिर पीढ़ी पर भी सिंदूर व पीठार से अहिपन बनाया जाता है फिर बहने बड़े प्रेम व उत्साह के साथ पूजा की थाल सजाती है । जिसमें एक मटकुरी अर्थात मिट्टी का लोटा भाई का हाथ धुलाने के लिए रखा जाता है और सिंदूर पीठार फूल अक्षत पान सुपारी अंकुरी घी का दीपक तथा मिठाई और जल से भरा पात्र रखा जाता है फिर जब भाई नहा-धोकर स्वच्छ कपड़े पहन तैयार होकर बहन के यहां आता है ।

तब बहन बड़े ही स्नेह के साथ अपने भाई को गले से लगाती है उसकी नजर उतार कर उसकी बलैया लेती है और फिर अहिपन से सजाया हुआ पीढ़ी अहिपन दिए गये स्थान आंगन में रखती है और भाई को पूरब दिशा की ओर मुख करके बैठने को कहती ।

भाई चुक्कमुखी अर्थात उकड़ू होकर पीढ़ी पे अपनी दोनों हथेलियों को आगे करके बैठता है और फिर बहन स्नेह से अपने भाई को निहारते हुए उसके माथे पे पहले पीठार से टीका लगाती है और फिर सिंदूर से उसके बाद अक्षत से उस टीके को सजाती है और फिर भाई के दोनों हथेलियों में पीठार और सिंदूर लगाती है फिर पान और सुपारी उसकी हथेली में रख कर (यमुना न्यौता यम के हम न्यौतैछी अपने भाई के ,जहिना गंगा यमुना क जल बढै तहिना हमरा भाई के ओरदा बरहा अर्थात आयु बढ़े) इस मंत्र का उच्चारण कर जल से उसका हाथ धुलाती है । यह प्रक्रिया तीन बार किया जाता है । उसके बाद बहन भाई को अंकुरी और मिठाई खिलाती है फिर आरती करती है?।

इसके बाद अगर बहन बड़ी है तो भाई बहन के चरण स्पर्श कर उससे आशीर्वाद लेता है या भाई बड़ा है तो बहन उनके चरण स्पर्श कर उन से आशीर्वाद लेती है ।

फिर भाई बहन को उपहार देता है । और आज बहन अपने हाथों से भोजन बना कर अपने हाथों से ही अपने भाई को खिलाती है । हमारे यहां मिथिलांचल में इस त्योहार को भाईदूज नहीं बल्कि भरदुतिया कहा जाता है । भाई बहन के स्नेह के इस पावन पवित्र त्योहार की आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं ...!!

किरण कांजल
बेंगलुरु

काव्य संग्रह - बसंत का हुआ विमोचन

फतेहाबाद (आगरा)। मयंक ढाबा एण्ड कैफे, पूठपुरा-फतेहाबाद पर कैफे के भव्य शुभारंभ के अवसर पर मुकेश कुमार ऋषि वर्मा द्वारा रचित काव्य संग्रह 'बसंत' का लोकार्पण जिला मंत्री भाजपा महेन्द्र छोटेलाल वर्मा (पुत्र -स्मृतिशेष विधायक श्री छोटेलाल वर्मा जी) मान सिंह वर्मा, डॉ. रामकुमार उपाध्याय, ऐदल सिंह नेताजी, रामस्नेही वर्मा, अवधेश कुमार मझवार एडवोकेट के करकमलों से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला मंत्री महेन्द्र छोटेलाल लाल वर्मा ने 'बसंत' की रचनाओं पर विस्तार से

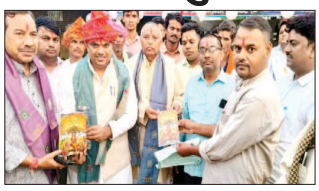

चर्चा की और एक रचना 'दीवाली' का काव्य पाठ भी किया। उपस्थित अन्य महानुभावों ने भी काव्य संग्रह की सराहना की, साथ ही मुकेश कुमार ऋषि वर्मा को उनकी नवीन कृति के लिए बधाईयाँ दीं। कार्यक्रम में उपस्थित रहे - बनवारी लाल, प्रीतम निषाद, डॉ. हरीशचंद्र, राजू ठेकेदार, केदार ठाकुर, लाखन सिंह प्रधान, बारेलाल प्रधान, राजू प्रधान, सुनील, मनीष निषाद, नीतेश, रामकरन, सत्यवीर, राहुल, संतोष, प्रशांत गुर्जर, आदि ।

अंतरिक्ष से लोकतंत्र की दस्तक: धर्म की राजनीति से नागरिक चेतना तक

अमेरिका के 2026 के मिडटर्म चुनाव में भारतीय मूल के अंतरिक्ष यात्री अनिल मेनन समेत तीन अंतरिक्ष यात्रियों ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) से मतदान किया। उन्होंने 400 किलोमीटर से अधिक ऊंचाई पर इलेक्ट्रॉनिक बैलेट के माध्यम से अपना मत अमेरिकी चुनाव अधिकारियों तक सुरक्षित पहुंचाया। उल्लेखनीय है कि अमेरिका में अंतरिक्ष से मतदान की शुरुआत 1997 में हुई थी। अंतरिक्ष यात्री डेविड वुल्फ ऐसे पहले अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री बने थे, जिन्होंने रूस के मीर अंतरिक्ष स्टेशन से मतदान किया था। यह घटना केवल विज्ञान और तकनीक की उपलब्धि नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक चेतना का भी उदाहरण है।



यह भारत के सामने एक महत्वपूर्ण सवाल रखती है-जब अंतरिक्ष में रहकर भी नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकता है, तो क्या धरती पर रहने वाला मतदाता भी धर्म और जाति से ऊपर उठकर अपने विवेक से मतदान कर रहा है? भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना भारत को पंथनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित करती है। अनुच्छेद 14 समानता, अनुच्छेद 15 भेदभाव के निषेध, अनुच्छेद 25 धार्मिक स्वतंत्रता तथा अनुच्छेद 326 वयस्क मताधिकार का प्रावधान करता है। भारत में 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के पात्र नागरिकों को मतदान का अधिकार प्राप्त है। समकालीन भारतीय राजनीति में धर्म और राजनीतिक पहचान का प्रभाव एक महत्वपूर्ण विमर्श है। कई बार चुनावी चर्चाओं में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, महंगाई, कृषि और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों के साथ धार्मिक पहचान भी प्रमुखता प्राप्त कर लेती है। धर्म व्यक्ति की आस्था का विषय है, जबकि राजनीति का मूल उद्देश्य जनकल्याण होना चाहिए। समस्या धर्म में नहीं, बल्कि धार्मिक भावनाओं के राजनीतिक इस्तेमाल में है। इस संदर्भ में जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 123(3) महत्वपूर्ण है, जो धर्म, जाति, समुदाय या भाषा के आधार पर वोट मांगने को भ्रष्ट आचरण के दायरे में रखती है। निर्वाचन आयोग की आदर्श आचार संहिता भी धार्मिक भावनाओं के आधार पर चुनाव प्रचार और धार्मिक स्थलों के राजनीतिक उपयोग को हतोत्साहित करती है। आज आवश्यकता ऐसी राजनीतिक संस्कृति की है, जहां चुनावी बहस का केंद्र मंदिर-मस्जिद की प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि विद्यालयों की गुणवत्ता, अस्पतालों की सुविधा, युवाओं का रोजगार और किसानों की समृद्धि हो। अंतरिक्ष से मतदान का संदेश स्पष्ट है—लोकतंत्र की असली शक्ति सत्ता, धर्म या जाति में नहीं, बल्कि जागरूक नागरिक और उसके विवेकपूर्ण मत में निहित है। मतदाता की सबसे बड़ी पहचान उसका धर्म नहीं, बल्कि उसकी नागरिकता है।



रवि रंजन , 8700146743

शब्द प्रहार...

